भारतीय वैश्विक परिषद

समाचार पत्रक

अंक : 27 | अक्टूबर - दिसंबर 2021

मुख्य विशेषताएं

महामहिम श्री वुओंग दिन्ह ह्यू, प्रेसिडेंट, वियतनाम नेशनल असेंबली ने भारत-वियतनाम व्यापक रणनीतिक साझेदारी 2016-2021 की 5वीं वर्षगांठ तथा भारत और वियतनाम 1972-2022 के बीच राजनयिक संबंधों की 50वीं वर्षगांठ के समारोह की घोषणा के अवसर पर 17 दिसंबर 2021 को संबोधित किया। इस अवसर पर विदेश मंत्री डॉ. एस जयशंकर ने एक वक्तव्य दिया।

विदेश राज्य मंत्री डॉ. राजकुमार रंजन सिंह ने 15 दिसंबर 2021 को 8वें हिंद महासागर संवाद, हिंद महासागर रिम एसोसिएशन की ट्रैक 1.5 फ्लैगशिप पहल में मुख्य भाषण दिया। इस अवसर पर आईओआरए के कार्यवाहक महासचिव डॉ. गाटोट हरि गुणवान ने अपने विचार व्यक्त किए। सुश्री रीवा गांगुली दास, सचिव (पूर्व) ने समापन भाषण दिया।

6 दिसंबर 2021 को, भारत-बांग्लादेश राजनयिक संबंधों की 50वीं वर्षगांठ के अवसर पर प्रथम मैत्री दिवस स्मरणोत्सव मनाने के लिए आईसीडब्ल्यूए को बांग्लादेश की प्रधान मंत्री, महामान्या शेख हसीना की ओर से संदेश प्राप्त करने का सम्मान प्राप्त हुआ। इस अवसर पर बांग्लादेश के संस्कृति राज्य मंत्री महामहिम श्री के. एम. खालिद और विदेश मंत्रालय के विदेश सचिव श्री हर्षवर्धन श्रृंगला ने भी भारत-बांग्लादेश संबंधों पर विचार व्यक्त किए।

शंघाई सहयोग संगठन के महासचिव, राजदूत व्लादिमीर नोरोव ने भारत और एससीओ के भविष्य को आगे बढ़ाने के लिए 29 अक्टूबर 2021 को आयोजित अंतर्राष्ट्रीय वेबिनार के उद्घाटन सत्र को संबोधित किया।

विषय-सूची

"आसियान और म्यांमार में राजनीतिक संकट" पर वेबिनार, 01 अक्टूबर 2021 4

हिंद महासागर रिम अकैडमिक ग्रुप (आईओआरएजी) की 26 वीं बैठक, 06 अक्टूबर 2021 4

अफ़गानिस्तान "द वे फ़ॉरवर्ड" पर वेबिनार, 20 अक्टूबर 2021 5

शांति स्थापना पर चौथा आईसीडब्ल्यूए-यूएसआई वेबिनार "यूएन पीस ऑपरेशंस एंड प्रोटेक्शन ऑफ सिविलियन्स", 22 अक्टूबर 2021 6

प्रथम भारत-कोरिया गणराज्य 2+2 संवाद, 27 अक्टूबर 2021 7

"शंघाई कोऑपरेशन ऑर्गेनाइज़ेशन (एससीओ) एंड इंडिया: द ट्रेजेक्टरी अहेड" पर सम्मेलन, 29 अक्टूबर 2021 8

"रीडिंग फ़ॉल्ट लाइन्स इन गल्फ़ रीजन" पर वेबिनार, 01 नवंबर 2021 9

दूसरी आईसीडब्ल्यूए-विल्सन सेंटर, वाशिंगटन डी.सी. 'चीन-रूस संबंध' पर क्लोज्ड डोर ब्रीफिंग, 10 नवंबर 2021 10

"अफ़गानिस्तान पर चीन की स्थिति: क्षेत्रीय परिप्रेक्ष्य" पर वेबिनार, 15 नवंबर 2021 10

गौतम बंबावाले, विजय केलकर, रघुनाथ माशेलकर, गणेश नटराजन, अजीत रानाडे, अजय शाह द्वारा आईसीडब्ल्यूए की पुस्तक "राइज़िंग टू द चाइना चैलेंज: विनिंग थ्रू स्ट्रेटेजिक पेशेंस एंड इकोनॉमिक ग्रोथ" पर परिचर्चा, 23 नवंबर 2021 11

8वाँ आईसीडब्ल्यूए-पीआईएसएम सामरिक संवाद, 24 नवंबर 2021 12

मैत्री दिवस: भारत - बांग्लादेश राजनयिक संबंधों की 50वीं वर्षगांठ, 06 दिसंबर 2021 14

8वाँ हिंद महासागर संवाद, 15 दिसंबर 2021 15

भारत-वियतनाम व्यापक सामरिक साझेदारी 2016-2021 की 5वीं वर्षगांठ का समारोह तथा भारत और वियतनाम के बीच राजनयिक संबंधों की 50वीं वर्षगांठ के समारोह की घोषणा 1972-2022, 17 दिसंबर 2021 17

9वां सीआईसीए थिंक टैंक फ़ोरम, 28-29 दिसंबर 2021 18

प्रकाशन 19

इंडिया क्वार्टरली सम्पादकीय 23

"आसियान और म्यांमार में राजनीतिक संकट" पर वेबिनार, 01 अक्टूबर 2021

भारतीय वैश्विक परिषद् (ICWA) ने 1 अक्टूबर 2021 को "आसियान और म्यांमार में राजनीतिक संकट" नामक एक वेबिनार की मेज़बानी की। वेबिनार की अध्यक्षता राजदूत गौतम मुखोपाध्याय, सीनियर विजिटिंग फ़ेलो, सेंटर फ़ॉर पॉलिसी रिसर्च, नई दिल्ली और म्यांमार में भारत के पूर्व राजदूत ने की। पैनल के सदस्यों में शामिल थे: प्रो. खाम खान सुआन हौसिंग, राजनीति विज्ञान विभाग, स्कूल ऑफ़ सोशल साइसेज़, हैदराबाद विश्वविद्यालय, श्री अंगशुमान चौधरी, वरिष्ठ शोधकर्ता और समन्वयक दक्षिण पूर्व एशिया अनुसंधान कार्यक्रम, इंस्टिट्यूट ऑफ़ पीस एंड कॉन्फ्लिक्ट स्टडीज़, नई दिल्ली, और डॉ. राजेन सिंह लैशराम, राजनीति विज्ञान विभाग, मणिपुर केंद्रीय विश्वविद्यालय, इंफाल। म्यांमार में चल रहे राजनीतिक संकट और क्षेत्र के लिए इसके सामाजिक-आर्थिक व सुरक्षा प्रभावों पर वेबिनार में चर्चा की गई। वक्ताओं ने उस भूमिका पर चर्चा की जिसे आसियान को निभाने की जरूरत है और संकट को दूर करने के लिए इसकी अनुक्रिया कितनी प्रभावी रही है।

हिंद महासागर रिम अकैडमिक ग्रुप की 26वीं बैठक, 06 अक्टूबर 2021

हिंद महासागर रिम एसोसिएशन (आईओआरए) के हिंद महासागर रिम अकैडमिक ग्रुप (आईओआरएजी) की 26वीं बैठक भारत की अध्यक्षता में आभासी रूप में 06 अक्टूबर 2021 को आयोजित की गई। विदेश मंत्रालय ने आईसीड्ब्ल्यूए को दो वर्ष 2019-2021 की अवधि के लिए भारत की ओर से आईओआरएजी की अध्यक्षता हेतु नामित किया था। आईओआरएजी की 26वीं बैठक में आईओआरए के सदस्य देशों जैसे ऑस्ट्रेलिया, बांग्लादेश, फ्रेंच (फ्रांस/रीयूनियन), भारत, इंडोनेशिया, केन्या, मलेशिया, मालदीव, मॉरीशस, मोजाम्बिक, सेशेल्स, दक्षिण अफ्रीका, श्रीलंका, संयुक्त अरब अमीरात और यमन के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। आईओआरए सचिवालय और आईओआरए रीजनल सेंटर फ़ॉर साइंस एंड टेक्नोलॉजी ट्रांसफ़र (आरसीएसटीटी) ने भी बैठक में भाग लिया। डॉ हेंड अल-तायर, निदेशक, विज्ञान, प्रौद्योगिकी और अनुसंधान विभाग, शिक्षा मंत्रालय, संयुक्त अरब अमीरात ने आईओआरए के अध्यक्ष के रूप में यूएई का प्रतिनिधित्व करते हुए स्वागत भाषण दिया।

दो संवादमूलक सत्र आयोजित किए गए जहां भारत के वक्ताओं ने मुख्य भाषण दिया। पहला सत्र 'फाइनेंसिंग सस्टेनेबल ब्लू इकोनॉमी' पर था और वक्ताओं में प्रोफेसर वीएन अत्री, इंडियन ओशियन स्टडीज, आईओआरए के पूर्व अध्यक्ष और प्रोफेसर जो-एन्सी वैन वायके, यूनिवर्सिटी ऑफ़ साउथ अफ्रीका, दक्षिण अफ्रीका शामिल थे। दूसरा सत्र 'स्मार्ट पोर्ट्स एंड डिजिटल सप्लाई चेन' पर था और वक्ताओं में डॉ विजय सखुजा, आईसीडब्ल्यूए, भारत और डॉ जेसिका फ्रेजर, नेल्सन मंडेला यूनिवर्सिटी, दक्षिण अफ्रीका शामिल थे। इस पर सहमति हुई कि प्रासंगिक आईओआरए वर्किंग/कोर ग्रुप (ब्लू इकोनॉमी, महिला आर्थिक अधिकारिता, समुद्री संरक्षा और सुरक्षा, पर्यटन, और व्यापार व निवेश) और वरिष्ठ अधिकारियों की समिति के विचार हेतु इन विषयों पर सिफ़ारिशों का एक सेट विकसित किया जाए। आगे के विचार के लिए लिंग और महिला आर्थिक अधिकारिता के मुद्दों की भी पहचान की गई। बैठक की अध्यक्षता डॉ. निवेदिता रे, निदेशक (अनुसंधान), आईसीडब्ल्यूए ने की और समन्वयक थीं डॉ. प्रज्ञा पांडे, रिसर्च फ़ेलो, आईसीडब्ल्यूए। दक्षिण अफ्रीका ने भारत से 2022-23 के लिए आईओआरएजी की अध्यक्षता संभाली।

अफ़गानिस्तान पर वेबिनार "द वे फ़ॉरवर्ड", 20 अक्टूबर 2021

20 अक्टूबर 2021 को, आईसीड्ब्ल्यूए ने "अफ़गानिस्तान: द वे फ़ॉरवर्ड" पर एक वेबिनार का आयोजन किया। पैनल की अध्यक्षता राजदूत राकेश सूद, अफ़गानिस्तान में पूर्व भारतीय दूत ने की और पैनल में सम्मिलित थे – राजदूत फुंचोक स्टोबदान, सीनियर फ़ेलो, दिल्ली पॉलिसी ग्रुप, नई दिल्ली, श्री राणा बनर्जी, पूर्व विशेष सचिव, कैबिनेट सचिवालय, भारत सरकार, डॉ. राघव शर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर और निदेशक, सेंटर फ़ॉर अफ़गानिस्तान, जिंदल स्कूल ऑफ़ इंटरनेशनल अफ़ेयर्स, ओपी जिंदल ग्लोबल यूनिवर्सिटी और सुश्री नयनिमा बसु, वरिष्ठ सहयोगी संपादक, द प्रिंट।

अपने उद्घाटन भाषण में राजदूत सूद ने अफ़गानिस्तान की स्थिति का एक व्यापक सिंहावलोकन प्रस्तुत किया और कहा कि अफ़गान स्थिति हमें बताती है कि कुछ आख्यान इतिहास को कैसे ढालते हैं। तालिबान को एक आतंकवादी संगठन के रूप में देखा जाता था। आतंकवाद से निपटना उग्रवाद से निपटने से अलग था। एक राजनीतिक सक्रियक के रूप में तालिबान का उदय दोहा में राजनीतिक कार्यालय की स्थापना के साथ शुरू हुआ। इसने आतंकवादी समूह के वैधीकरण की प्रक्रिया शुरू की। दोहा समझौते को दुनिया भर में शांति समझौते के रूप में मनाया गया। यह आख्यान बाद में पूरी तरह से बदल गया और दोहा समझौते को अब एक वापसी समझौते के अलावा किसी अन्य रूप में नहीं देखा जाता। उन्होंने कहा, वर्तमान परिदृश्य में, हो सकता है कि अमेरिका, जमीन पर जो हो रहा है उसके संदर्भ में सक्रिय भूमिका न निभाए। इसलिए, क्षेत्र के देशों को कार्य करना होगा।

राजदूत फुंचोक स्टोबदान ने अपने भाषण में कहा कि अफ़गानिस्तान सैन्य विफलता का मामला नहीं है। यह बेदखली का एक स्पष्ट मामला है और चीन व रूस द्वारा संयुक्त राज्य अमेरिका को अफ़गान-जाल में खींचने के लिए एक खेल खेला गया था। उन्होंने तर्क दिया कि अफ़गान संस्कृति का मानव जाति विज्ञान संबंधी मूल्यांकन महत्वपूर्ण है। तालिबान को मानव जाति विज्ञान संबंधी नज़रिए से देखा जाना चाहिए। उन्होंने देखा कि कूटनीति गतिरोध पर है और अंतर्राष्ट्रीय समुदाय अफ़गानिस्तान का समर्थन करने के लिए प्रतिबद्ध है लेकिन यह तालिबान के व्यवहार पर निर्भर करता है। श्री राणा बनर्जी का मानना था कि काबुल के पतन के बाद पाकिस्तान ने बहुत अधिक विजयवाद दिखाया और वह विजयवाद रणनीतिक गहनता की अवधारणा से जुड़ा है। उन्होंने कहा कि डूरंड रेखा पाकिस्तान और तालिबान के बीच एक समस्याग्रस्त सीमा बनी हुई है। तालिबान ने सत्ता में अपने पहले के कार्यकाल के दौरान इसे कभी स्वीकार नहीं किया था। उन्होंने तर्क दिया कि भारत के लिए तालिबान के साथ कोई लाइन खोलना फिलहाल संभव नहीं है, क्योंकि हम अपने पिछले अनुभवों को नहीं भूल सकते। भारत तालिबान के साथ अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ सकता है। उन्होंने सुझाव दिया कि भारत अफ़गानिस्तान के साथ मानवीय सहायता कॉरिडोर के बारे में सोच सकता है।

प्रो. राघव शर्मा ने बताया कि अफ़गानिस्तान के भीतर के वर्तमान घटनाक्रम को किस प्रकार देखा जाता है। अधिकारों में कटौती की जाती है और पश्तून के आंकड़े मिटा दिए जाते हैं और उनके स्थान पर तालिबान के धार्मिक नारे लिख दिए जाते हैं। उन्होंने देखा कि तालिबान के अंदर अफ़गान सांस्कृतिक पहचान को खत्म किया जा रहा है। अफ़गानिस्तान में, महिलाओं और पत्रकारों जैसे विभिन्न समूहों द्वारा विरोध प्रदर्शन किए गए। विरोध केवल शहरी क्षेत्रों तक ही सीमित नहीं था। यह इस तथ्य को रेखांकित करता है कि तालिबान की वैधता के बारे में सवाल पूछे जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि हाल के वर्षों में जो सांस्कृतिक, राजनीतिक और बौद्धिक यात्रा हुई है, वह खतरे में है। तालिबान अफ़गानिस्तान की नई सामाजिक वास्तविकता के साथ तालमेल बिठाने के लिए भी संघर्ष कर रहा है।

सुश्री नयनिमा बसु ने काबुल के तालिबान अधिग्रहण से पहले और उसके दौरान अफ़गानिस्तान से रिपोर्टिंग के अपने अनुभवों के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि तालिबान को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिलना फिलहाल मुश्किल है। तालिबान को लगभग दस बिलियन डॉलर के अपने विदेशी भंडार तक पहुंच प्राप्त करने के लिए मान्यता की आवश्यकता है, जिसे अमेरिका ने फ्रीज़ कर दिया है। उन्होंने यह भी कहा कि यह समझने के लिए भारत के लिए तालिबान के साथ संचार और जुड़ाव आवश्यक है, कि वे लोग अफ़गानिस्तान को दी गई सहायता का उपयोग कैसे करने जा रहे हैं।

"यूएन पीस ऑपरेशन: प्रोटेक्शन ऑफ़ सिविलियन्स" विषय पर शांति स्थापना पर चौथा आईसीडब्ल्यूए-यूएसआई वेबिनार, 22 अक्टूबर 2021

आईसीडब्ल्यूए और यूनाइटेड सर्विस इंस्टीट्यूशन ऑफ इंडिया (यूएसआई) ने 22 अक्टूबर 2021 को "यूएन पीस ऑपरेशन: प्रोटेक्शन ऑफ सिविलियन्स" पर यूएन शांति स्थापना पर चौथे वेबिनार की मेजबानी की। मेजर जनरल पी.के. गोस्वामी (सेवानिवृत्त), उप निदेशक, यूएसआई ने स्वागत भाषण दिया, जिसके बाद यूएन डिपार्टमेंट ऑफ़ पीस ऑपरेशन (डीपीओ) में नीति, मूल्यांकन और प्रशिक्षण प्रभाग के निदेशक श्री डेविड हैरी ने मुख्य भाषण दिया। वेबिनार का संचालन कर्नल (डॉ.) के. के. शर्मा (सेवानिवृत्त), विजिटिंग फ़ेलो , यूएसआई, द्वारा किया गया और पैनल के सदस्यों में निम्नलिखित सम्मिलित थे - डॉ. अली अहमद, भारतीय सेना के वयोवृद्ध, पूर्व अकैडमिक और संयुक्त राष्ट्र के एक अधिकारी; डॉ. सेड्रिक डी कॉनिंग, रिसर्च प्रोफेसर, नॉर्वेजियन इंस्टीट्यूट ऑफ इंटरनेशनल अफेयर्स (एनयूपीआई); ब्रिगेडियर धनंजय जोशी, सेक्टर कमांडर, यूनाइटेड नेशन्स मिशन इन साउथ सूडान (यूएनएमआईएसएस)। मेजर जनरल एस. अस्थाना (सेवानिवृत्त), मुख्य प्रशिक्षक, यूएसआई और जनरल बी. के. शर्मा, निदेशक, यूएसआई ने भी अपने वक्तव्य दिए। राजदूत विजय ठाकुर सिंह, महानिदेशक, आईसीडब्ल्यूए द्वारा समापन भाषण दिया गया। वेबिनार में चर्चा की गई कि अंतर्देशीय संघर्षों के दौरान निर्दोष नागरिकों को गोलीबारी का सामना किस प्रकार करना पड़ता है और शांतिरक्षक जनादेश के कार्यान्वयन में आने वाली कई चुनौतियों और बाधाओं पर विचार-विमर्श किया। संयुक्त राष्ट्र शांति रक्षा अभियानों के लिए एक बहुआयामी दृष्टिकोण के महत्व और नागरिकों की सुरक्षा के सभी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए एक एकीकृत दृष्टिकोण की आवश्यकता पर विचार-विमर्श केंद्रित था।

प्रथम भारत-कोरिया गणराज्य 2+2 संवाद, 27 अक्टूबर 2021

27 अक्टूबर 2021 को, कोरियन नेशनल डिप्लोमेटिक एकेडमी (केएनडीए) और कोरिया इंस्टीट्यूट फ़ॉर इंटरनेशनल इकोनॉमिक पॉलिसी (केआईईपी) के साथ आईसीडब्ल्यूए व आरआईएस द्वारा संयुक्त रूप से कोरिया गणराज्य के पहले 2+2 संवाद की मेजबानी की गई। संवाद का आयोजन "उभरते क्षेत्रीय क्रम में भारत-कोरिया संबंधों की पुनर्कल्पना: 'एक्ट ईस्ट पॉलिसी' और 'न्यू सदर्न पॉलिसी' को पांच विषयगत सत्रों में शामिल करना" विषय के अंतर्गत किया गया था – जिसमें सम्मिलित हैं। एक बदलते वैश्विक और क्षेत्रीय संदर्भ में भारत-कोरिया संबंध: रणनीतिक दृष्टिकोण, कोविड के बाद की अंतरराष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था में भारत-कोरिया आर्थिक साझेदारी का पुन:संदर्भ देना और वे फ़ॉरवर्ड: भारत-कोरिया द्विपक्षीय संबंध।

बैठक में भारत और आरओके के विद्वानों के साथ-साथ राजदूत विजय ठाकुर सिंह, महानिदेशक, आईसीडब्ल्यूए, प्रो. सचिन चतुर्वेदी, महानिदेशक, आरआईएस, राजदूत श्रीप्रिया रंगनाथन कोरिया गणराज्य में भारतीय राजदूत, डॉ. होंग ह्यूनिक, चांसलर, केएनडीए, डॉ किम, हेंगचोंग, अध्यक्ष, केआईईपी, राजदूत चांग जे-बोक, भारत में कोरिया गणराज्य के राजदूत, राजदूत नलिन सूरी, विशिष्ट फ़ेलो, दिल्ली पॉलिसी ग्रुप, राजदूत स्कंद तायल, कोरिया गणराज्य में पूर्व भारतीय राजदूत, प्रो. एस.के. मोहंती, प्रोफेसर, आरआईएस ने भाग लिया।

2+2 संवाद का विचार 2018 में आईसीडब्ल्यूए-केएनडीए संवाद के दौरान उभरा, जिसका उद्देश्य दोनों देशों के प्रमुख आर्थिक थिंक टैंकों को शामिल करके मौजूदा संवाद मंच का विस्तार करना था। इस संबंध में, अक्टूबर 2020 में आईसीडब्ल्यूए/आरआईएस और केएनडीए/केआईईपी के बीच एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। भारत-कोरिया संबंधों की वर्तमान स्थिति और भविष्य पर विचारों का आदान-प्रदान करने के लिए यह संवाद, एक ऐसे संदर्भ में जहां वैश्विक, क्षेत्रीय और द्विपक्षीय वातावरण भू-राजनीतिक और भू-आर्थिक कारकों और COVID-19 महामारी के कारण महत्वपूर्ण परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है, दोनों देशों के अकैडमिक और नीति विशेषज्ञों को एक साथ लाने का एक प्रयास था।

संवाद के दौरान, प्रतिभागियों ने देखा कि भारत और कोरिया गणराज्य के बीच द्विपक्षीय संबंध, ऐतिहासिक संबंधों और सांस्कृतिक आत्मीयता में निहित हैं और लोकतंत्र व बाजार अर्थव्यवस्था के साझा मूल्यों पर आधारित हैं, जो पिछले दो दशकों में उत्तरोत्तर मजबूत हुए हैं। 2015 में दोनों देशों के बीच विशेष रणनीतिक साझेदारी पर हस्ताक्षर किए गए, और भारत की एक्ट ईस्ट पॉलिसी और कोरिया की न्यू सदर्न पॉलिसी (अब "न्यू सदर्न पॉलिसी प्लस" में अपग्रेड किया गया) के बीच हितों और पूरकताओं की अधिक समाभिरूपता, द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने के नए अवसर प्रदान करती है। दोनों देशों के नेताओं के बीच मजबूत व्यक्तिगत बंधन और बढ़ते ऐतिहासिक व सांस्कृतिक संबंधों को भी द्विपक्षीय संबंधों के महत्वपूर्ण संचालक कारकों के रूप में उजागर किया गया।

"एससीओ एंड इंडिया: द ट्रेजेक्टरी अहेड" पर सम्मेलन, 29 अक्टूबर 2021

आईसीडब्ल्यूए ने 29 अक्टूबर 2021 को एक ऑनलाइन सम्मेलन 'एससीओ एंड इंडिया: द ट्रैजेक्टरी अहेड' का आयोजन किया। उद्घाटन सत्र में वक्ताओं में निम्नलिखित शामिल थे – राजदूत विजय ठाकुर सिंह, महानिदेशक, आईसीडब्ल्यूए, राजदूत रीनत संधू, सचिव (पश्चिम), विदेश मंत्रालय, नई दिल्ली और राजदूत व्लादिमीर नोरोव, महासचिव, शंघाई सहयोग संगठन, बीजिंग।

अपने स्वागत संबोधन में, राजदूत विजय ठाकुर सिंह ने कहा कि यह सम्मेलन हाल ही में ताजिकिस्तान में आयोजित 21वें राष्ट्राध्यक्षों के शिखर सम्मेलन की अनुवर्ती कार्यवाही स्वरूप और नवंबर में कज़ाकिस्तान में होने वाली सरकार के प्रमुखों की आगामी बैठक के रनर-अप के रूप में आयोजित किया गया है। एससीओ अपनी स्थापना के 20 वर्ष पूरे कर रहा है और एक प्रभावी क्षेत्रीय स्वर के रूप में इसका महत्व बढ़ रहा है। सर्वसम्मति पर आधारित इसकी निर्णय लेने की प्रक्रिया इसके एजेंडे और सदस्यता के विस्तार के लिए उपयोगी रही है। एससीओ परिवार, एक नए सदस्य के रूप में ईरान और पर्यवेक्षकों के रूप में सऊदी अरब, कतर और मिस्र को सम्मिलित करके बढ़ा है। विस्तार संगठन को मजबूत करता है और बढ़ी हुई आर्थिक और रणनीतिक गतिशीलता के लिए नई संभावनाएं भी खोलता है। यह नोट करना महत्वपूर्ण था कि हेड्स ऑफ़ गवर्नमेंट समिट की 19वीं काउंसिल की मेजबानी भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री एम वेंकैया नायडू ने की।

राजदूत रीनत संधू, सचिव (पश्चिम), विदेश मंत्रालय, नई दिल्ली ने अपने विशेष संबोधन में कहा कि भारत ने 2005 में एक पर्यवेक्षक राज्य के रूप में और फिर 2017 से एक पूर्ण सदस्य राज्य के रूप में एससीओ के साथ अपने सहयोग में एक लंबा सफर तय किया है। भारत एक सकारात्मक और रचनात्मक भूमिका निभाता है जिससे इस क्षेत्र के विकास और समृद्धि में योगदान मिलता है। भारत आतंकवाद, अलगाववाद और उग्रवाद, आतंकवाद के वित्तपोषण, नशीली दवाओं, हथियारों और गोला-बारूद की अवैध तस्करी का सामना करने में रीजनल एंटी-टेररिस्ट स्ट्रक्चर (आरएटीएस) में चल रहे सहयोग को महत्व देता है। उन्होंने कहा कि भारत एससीओ आरएटीएस (2021-22) के वर्तमान अध्यक्ष के रूप में आरएटीएस के काम में सक्रिय रूप से योगदान देने और इसकी गतिविधियों को एक नई दिशा और गति देने की आशा करता है। भारत ने एससीओ के भीतर सहयोग के तीन नए स्तंभ बनाने का प्रस्ताव रखा था - पारंपरिक चिकित्सा, एस एंड टी और स्टार्ट-अप व इनोवेशन। भारत ने साझा बौद्ध विरासत पर पहली बार आभासी प्रदर्शनी का भी आयोजन किया और क्षेत्रीय भारतीय साहित्य की दस पुस्तकों का एससीओ की आधिकारिक भाषाओं - रूसी और चीनी में अनुवाद किया।

राजदूत व्लादिमीर नोरोव, महासचिव, एससीओ ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि आईसीडब्ल्यूए एक प्रभावी बौद्धिक केंद्र है जो एससीओ के कामकाज में सुधार और अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में आम हितों को बढ़ावा देने के लिए उपयोगी विचार पैदा करने में सक्षम है। उन्होंने कहा कि अफ़गानिस्तान का मुद्दा एससीओ के एजेंडे में सबसे ऊपर है। एससीओ एक स्वतंत्र, तटस्थ, लोकतांत्रिक और शांतिपूर्ण अफ़गानिस्तान की स्थापना की वकालत करता है - एक समावेशी सरकार जिसमें अफ़गान समाज के सभी जातीय, धार्मिक और राजनीतिक समूहों की भागीदारी हो। राजदूत नोरोव ने 2017 में पूर्ण सदस्य बनने के बाद से एससीओ गतिविधियों में भारत की सक्रिय भागीदारी की सराहना की। भारत की सदस्यता ने एससीओ की भौगोलिक पहुंच को काफी

व्यापक बना दिया है और इस क्षेत्र तथा दुनिया में इसकी रूपरेखा और प्रभाव को बढ़ाया है। उन्होंने कहा कि भारत में व्यापार और अर्थनीति, विज्ञान और प्रौद्योगिकी सहयोग, वैकल्पिक ऊर्जा स्रोत, आईटी, टेली-मेडिसिन, फार्मा, आतिथ्य और पर्यटन के मामले में बड़ी संभावनाएं हैं।

तकनीकी सत्रों में, प्रतिभागियों ने क्षेत्रीय और वैश्विक प्रवाह में एससीओ और भारत-एससीओ जुड़ाव पर विचारों का आदान-प्रदान किया।

"रीडिंग फ़ॉल्ट लाइन्स इन गल्फ़ रीजन" पर वेबिनार, 01 नवंबर 2021

आईसीडब्ल्यूए ने 1 नवंबर 2021 को "रीडिंग फ़ॉल्ट लाइन्स इन गल्फ़ रीजन" पर एक आभासी पैनल चर्चा का आयोजन किया। पैनल की अध्यक्षता राजदूत नवदीप सूरी ने की और इसमें निम्नलिखित शामिल हुए। प्रो गिरिजेश पंत, पूर्व प्रोफेसर, स्कूल ऑफ़ इंटरनेशनल स्टडीज, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) और दून विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति। डॉ. दीपिका सारस्वत, रिसर्च फ़ेलो, आईसीडब्ल्यूए और डॉ. प्रशांत कुमार प्रधान, वेस्ट एशिया सेंटर के एसोसिएट फ़ेलो और को ऑर्डिनेटर, मनोहर पर्रिकर इंस्टीट्यूट फ़ॉर डिफेंस स्टडीज एंड एनालिसिस (एमपी-आईडीएसए)। अपने उद्घाटन भाषण में, अध्यक्ष ने क्षेत्र में चार प्रमुख फ़ॉल्ट लाइन्स की पहचान की और कहा कि शिया क्रेसेंट के उद्भव ने क्षेत्र में सुन्नी-शिया विभाजन को बढ़ा दिया है। उन्होंने कहा कि वर्षों से, सऊदी अरब, बहरीन और यूएई ने तुर्की तथा कतर जैसे देशों द्वारा प्रचारित इस्लामवाद के खिलाफ़ धार्मिक सहिष्णुता की धारणा को प्रोत्साहित करने हेतु चुना है। उन्होंने सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात के बीच हालिया विवाद पर भी प्रकाश डाला जो हाल ही में ओपेक की बैठक में दिखाई दे रहा था।

डॉ. दीपिका ने बताया कि भू-राजनीतिक गुरुत्वाकर्षण के एक नए केंद्र के रूप में पूरे खाड़ी क्षेत्र के उभरने की स्थिति में, भारत किस तरह इस क्षेत्र में फ़ॉल्ट लाइन को नेविगेट कर रहा है। उन्होंने कहा कि भारत और खाड़ी क्षेत्र के बीच गहरी साझेदारी के लिए ऊर्जा क्षेत्र और समुद्री सुरक्षा केंद्रीय फ़ोकल बिंदु बने हुए लगते हैं।

अपनी टिप्पणी में डॉ. प्रशांत कुमार प्रधान ने इस बात पर ध्यान केंद्रित किया कि ईरान और सऊदी अरब के बीच संबंधों की वर्तमान गतिशीलता इस क्षेत्र की भूराजनीति को कैसे प्रभावित कर रही है। एक ओर जहां सऊदी अरब दो सबसे पवित्र मुस्लिम स्थलों का संरक्षक होने के कारण मुस्लिम दुनिया का नेता होने का दावा करता है, वहीं ईरान दुनिया भर में शिया आबादी का नेता होने का दावा करता है।

प्रो. गिरिजेश पंत ने क्षेत्र की सकारात्मक तस्वीर सामने रखी। उन्होंने कहा कि अंतर-क्षेत्रीय संघर्ष समय के साथ कम होने की संभावना है क्योंकि इस क्षेत्र के प्रत्येक सक्रियक के लिए संघर्ष की लागत अधिक हो रही है। खाड़ी क्षेत्र के देश तनाव को धीरे-धीरे कम करेंगे क्योंकि अमेरिका अब इस क्षेत्र को सुरक्षा प्रदान करने के लिए उत्साहित नहीं है।

दूसरी आईसीडब्ल्यूए-विल्सन सेंटर, वाशिंगटन डी.सी. 'चीन-रूस संबंध' पर चैथम हाउस नियमों के अधीन क्लोज्ड डोर ब्रीफिंग, 10 नवंबर 2021

आईसीडब्ल्यूए ने विल्सन सेंटर, वाशिंगटन डीसी के साथ 10 नवंबर 2021 को चीन-रूस संबंधों पर चैथम हाउस नियमों के अधीन सैकण्ड क्लोज्ड डोर ब्रीफिंग की मेजबानी की। प्रतिभागियों में शामिल थे श्री अब्राहम एम. डेनमार्क, वॉइस प्रेसिडेंट ऑफ़ प्रोग्राम्स और डायरेक्टर ऑफ़ स्टडीज़, एशिया प्रोग्राम के सीनियर एडवाइज़र, चीन और संयुक्त राज्य अमेरिका के किसिंजर संस्थान में सीनियर फ़ेलो, श्री मैथ्यू रोजान्स्की, वुडरो विल्सन सेंटर में केनन संस्थान के डायरेक्टर, श्री रॉबर्ट डेली, वुडरो विल्सन सेंटर में चीन और संयुक्त राज्य अमेरिका पर किसिंजर संस्थान के डायरेक्टर, राजदूत अजय मल्होत्रा रूस में भारत के पूर्व राजदूत, और प्रो श्रीकांत कोंडापल्ली, पूर्वी एशियाई अध्ययन केंद्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय।

"अफ़गानिस्तान पर चीन की स्थिति: क्षेत्रीय परिप्रेक्ष्य" पर वेबिनार, 15 नवंबर 2021

गुरु नानक देव विश्वविद्यालय (जीएनडीयू), अमृतसर के सहयोग से आईसीडब्ल्यूए ने "अफ़गानिस्तान पर चीन की स्थिति: क्षेत्रीय परिप्रेक्ष्य" पर एक वेबिनार आयोजित किया। राजदूत विजय ठाकुर सिंह, महानिदेशक, आईसीडब्ल्यूए ने और प्रो. (डॉ.) जसपाल सिंह संधू, कुलपति, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर ने वक्तव्य दिए। परिचर्चा की अध्यक्षता राजदूत अशोक कांथा ने की और वक्ताओं में निम्नलिखित सम्मिलित थे - प्रो. श्रीकांत कोंडापल्ली, पूर्व एशियाई अध्ययन केंद्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, प्रो राजेश कुमार, विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग, जीएनडीयू और डॉ. अतहर जफ़र, सीनियर रिसर्च फ़ेलो, आईसीडब्ल्यूए।

अपने स्वागत भाषण में, राजदूत विजय ठाकुर सिंह ने कहा कि, हालांकि अफ़गानिस्तान भूमि से घिरा देश है, पर इसका भौगोलिक महत्व बहुत है। ऐतिहासिक रूप से, यह सत्ता और प्रभाव के लिए संघर्ष के कई चरणों से गुज़रा है। अगस्त 2021 में अफ़गानिस्तान से अमेरिकी सेना की वापसी ने प्रवाह और अनिश्चितता की स्थिति पैदा कर दी है। भारत, वास्तव में कई राष्ट्र, अफ़गानिस्तान के घटनाक्रम पर करीब से नजर रख रहा है क्योंकि इसका न केवल अफ़गानिस्तान पर बल्कि उसके पड़ोसियों और क्षेत्र प्रभावित है। भारत ने 10 नवंबर 2021 को "देहली रीजनल सिक्योरिटी डायलाग ऑन अफ़गानिस्तान" की मेजबानी की, जिसमें ईरान, कज़ाकिस्तान, किर्गिज़ गणराज्य, रूस, ताजिकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान और उज़्बेकिस्तान की विस्तृत भागीदारी देखी गई। जहां तक चीन का संबंध है, अफ़गानिस्तान से पश्चिमी बलों की वापसी से पहले से ही वह तालिबान से उलझता रहा है। 28 जुलाई, 2021 को चीन के विदेश मंत्री वांग यी ने टियांजिन में अब्दुल गनी बरादर के नेतृत्व में तालिबान के एक प्रतिनिधिमंडल से मुलाकात की। चीन ने अफ़गानिस्तान को आरएमबी 200 मिलियन मूल्य की आपातकालीन मानवीय सहायता के प्रावधान की घोषणा की,

जिसमें कोविड-19 टीकों की 3 मिलियन खुराक का प्रारंभिक बैच शामिल है। तालिबान द्वारा चीन को आतंकवाद का मुकाबला करने के लिए दिए गए आश्वासनों के बारे में संदेह व्यक्त करते हुए, स्वयं चीन सहित, टिप्पणियां आई हैं।

अपने उद्घाटन भाषण में, प्रो. (डॉ.) जसपाल सिंह संधू ने जीएनडीयू में की गई नई पहलों के बारे में जानकारी दी और आईसीडब्ल्यूए के साथ सहयोग की सराहना की। उन्होंने चीन के विभिन्न प्रांतों का दौरा करने और यूजीसी अधिकारी के रूप में चीनी विश्वविद्यालय के साथ अपनी बातचीत के अपने अनुभव को साझा किया। डॉ. संजीव कुमार, सीनियर रिसर्च फ़ेलो, आईसीडब्ल्यूए ने इस बात पर प्रकाश डाला कि आईसीडब्ल्यूए पूरे भारत में विश्वविद्यालयों और थिंक-टैंक के साथ अपनी आउटरीच गतिविधियों के लिए प्रतिबद्ध है।

विशेषज्ञों ने इस बात पर प्रकाश डाला कि अफ़गानिस्तान पर चीन की स्थिति के साथ-साथ अफ़गानिस्तान में अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्रीय हितधारकों, विशेष रूप से रूस, ईरान और मध्य एशियाई देशों की स्थिति को, अफ़गानिस्तान में विकसित स्थिति के आलोक में समझना महत्वपूर्ण है। यह नोट किया गया कि चीन अपनी पैठ बढ़ा सकता है लेकिन एक कैलिब्रेटेड तरीके से ऐसा करेगा और अमेरिका तथा नाटो बलों की वापसी से पैदा हुई रिक्तता को भरने में जल्दबाजी नहीं करेगा।

गौतम बंबावाले, विजय केलकर, रघुनाथ माशेलकर, गणेश नटराजन, अजीत रानाडे, अजय शाह द्वारा आईसीडब्ल्यूए की पुस्तक "राइज़िंग टू द चाइना चैलेंज: विनिंग थ्रू स्ट्रेटेजिक पेशेंस एंड इकोनॉमिक ग्रोथ" पर परिचर्चा, 23 नवंबर 2021

23 नवंबर 2021 को, आईसीडब्ल्यूए ने "राइज़िंग टू द चाइना चैलेंज: विनिंग थ्रू स्ट्रेटेजिक पेशेंस एंड इकोनॉमिक ग्रोथ" पर एक ऑनलाइन पुस्तक परिचर्चा का आयोजन राजदूत गौतम बंबावाले, विजय केलकर, रघुनाथ माशेलकर, डॉ. गणेश नटराजन, डॉ. अजीत रानाडे और प्रो. अजय शाह द्वारा किया गया। बैठक के दौरान राजदूत विजय ठाकुर सिंह, डीजी, आईसीडब्ल्यूए ने उद्घाटन भाषण दिया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व एशियाई अध्ययन विभाग की पूर्व प्रमुख और प्रोफेसर प्रोफेसर मधु भल्ला ने की। अध्यक्ष के वक्तव्य के बाद, पुस्तक के लेखकों, राजदूत गौतम बंबावाले, चीन में भारत के पूर्व राजदूत, 5F वर्ल्ड के कार्यकारी अध्यक्ष और संस्थापक डॉ. गणेश नटराजन, प्रो. अजय शाह, पहले सेंटर फ़ॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकोनॉमी, और नेशनल इंस्टीट्यूट फ़ॉर पब्लिक फाइनेंस एंड पॉलिसी (एनआईपीएफपी) से संबद्ध और आदित्य बिड़ला समूह के समूह कार्यकारी अध्यक्ष और मुख्य अर्थशास्त्री डॉ अजीत रानाडे ने पुस्तक का संदर्भ और मुख्य भावार्थ प्रस्तुत किया। ब्रिगेडियर अरुण सहगल, सीनियर फ़ेलो, दिल्ली पॉलिसी ग्रुप और डॉ वेंकट रमन, एसोसिएट प्रोफेसर, आईआईएम इंदौर ने परिचर्चा के रूप में पुस्तक का अपना विश्लेषण प्रस्तुत किया।

राजदूत विजय ठाकुर सिंह, महानिदेशक, आईसीडब्ल्यूए ने कहा कि यह पुस्तक चीन के बारे में समझ को महत्वपूर्ण रूप से आगे बढ़ाएगी और चीन की विदेश नीति दृष्टिकोण की जानकारी को समृद्ध करेगी। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि चीन की चुनौती एक प्रमुख एशियाई और वैश्विक शक्ति बनने की महत्वाकांक्षा से उभरी है। यह आर्थिक, राजनयिक, सैन्य और तकनीकी क्षेत्रों सहित कई क्षेत्रों में प्रकट हुई है।
प्रो. मधु भल्ला ने इस बात पर प्रकाश डाला कि पुस्तक की विशेषता एक जटिल और तेजी से बदलती दुनिया में धमकी देने वाले अपने पड़ोसी से

निपटने के लिए एक भारतीय दृष्टिकोण प्रस्तुत करने का प्रयास है। यह भारत की चीन नीति की सीमाओं पर भी प्रकाश डालती है। भारत-चीन संबंधों के पिछले दृष्टिकोण, संबंधों के विभाजन पर जोर देने के साथ, अब गालवान के बाद के युग में मान्य नहीं हैं। राजदूत गौतम बंबावले ने बताया कि 2020 की गर्मियों में भारत की उत्तरी सीमा पर चीन की सैन्य कार्रवाई वह संदर्भ है जिसने लेखकों को पुस्तक लिखने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि भारत और चीन के बीच व्यापक राष्ट्रीय शक्ति में बहुत अधिक अंतर ने चीन को पूर्वी लद्दाख में सैन्य दुस्साहस करने के लिए प्रोत्साहित किया। दीर्घावधि में, चीन की चुनौती से निपटने के लिए भारत की स्थिति आर्थिक विकास पर ध्यान केंद्रित करते हुए, दोनों के बीच व्यापक राष्ट्रीय शक्ति के अंतर को कम करने पर केंद्रित होनी चाहिए।

डॉ. गणेश नटराजन ने इस बात पर जोर दिया कि भारत को चीन की चुनौती के लिए अपनी दीर्घकालिक प्रतिक्रिया में अपनी लड़ाई का चुनाव बहुत स्पष्टतः के साथ करना चाहिए। भारत को उन क्षेत्रों में प्रतिस्पर्धा से बचना चाहिए जिनमें चीन को तुलनात्मक लाभ है जैसे दुर्लभ पृथ्वी-धातुएं और चीन पर अपनी निर्भरता कम करनी चाहिए। तथापि, इसे दूरसंचार, ऑटोमोबाइल, वैक्सीन/फार्मा उद्योग, सूचना प्रौद्योगिकी, कृषि पर ध्यान देना चाहिए।

प्रो. अजय शाह ने कहा कि ऐसी स्थिति के बारे में सोचना बेमानी है जहां चीन की व्यापक शक्ति दो-तीन दशकों के बाद भारत से काफी आगे हो जाएगी। इसलिए चीन की चुनौती भारत के लिए, अन्ततोगत्वा उच्च जीडीपी विकास दर प्राप्त करने के लिए एक महत्वपूर्ण प्रेरणा है।

डॉ. अजीत रानाडे ने रेखांकित किया कि यह पुस्तक चीन की चुनौती का सामना करने के दृष्टिकोण को आगे बढ़ाती है, न कि चीन को हराने, आगे बढ़ने या अलग-थलग करने के दृष्टिकोण को। चीन की चुनौती से निपटने में, भारत के घरेलू मोर्चे पर बहुत कुछ उन्नति होनी है। पुस्तक आर्थिक विकास पर ध्यान केंद्रित करते हुए एक दीर्घकालिक परिप्रेक्ष्य प्रदान करती है।

ब्रिगेडियर अरुण सहगल (सेवानिवृत्त) ने इस बात पर प्रकाश डाला कि चीन अनिवार्य रूप से एक महाद्वीपीय शक्ति है और एक सीमित समुद्री शक्ति है। इसलिए चीनी शक्ति का पूरा तत्व उसके पूर्वी मोर्चे पर केंद्रित है। पिछले कुछ वर्षों में भारत के प्रति चीन की धारणा बदली है। चीन को विश्वास होने लगा है कि भारत एक प्रामाणिक चुनौती के रूप में उभरा है।

डॉ. वेंकट रमन ने कहा कि चीन की चुनौती के जवाब में भारत आर्थिक विकास का चीनी मार्ग नहीं अपना सकता। यद्यपि भारत तेजी से चीन विरोधी गठबंधन का हिस्सा बन रहा है, तथापि यह चीन के साथ उस समूह का भी हिस्सा है जो गैर-पश्चिमी अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था की मांग कर रहा है।

8वाँ आईसीडब्ल्यूए-पीआईएसएम सामरिक संवाद, 24 नवंबर 2021

आईसीडब्ल्यूए ने 24 नवंबर 2021 को पोलैंड में पोलिश इंस्टीट्यूट ऑफ इंटरनेशनल अफेयर्स (PISM) में अपने MoU पार्टनर के साथ अपनी आठवाँ सामरिक संवाद आयोजित किया। संवाद के लिए, तीन विषय निर्धारित किए गए थे की – चेंजिंग ग्लोबल सिनेरियो – ए शिफ़्ट टू इंडो-पैसिफिक; अंडरस्टैंडिंग रीजनल डायनामिक्स और इंडिया-पोलेण्ड बाइलैटरल रिलेशन्स – वे फ़ॉरवर्ड। उद्घाटन सत्र में वक्ताओं में शामिल थे – राजदूत विजय ठाकुर सिंह, महानिदेशक, आईसीडब्ल्यूए; श्री स्लावोमिर देबस्की, निदेशक, पीआईएसएम; राजदूत नगमा मलिक पोलैंड में भारत की राजदूत; और राजदूत एडम बुराकोव्स्की, भारत में पोलैंड के राजदूत। उद्घाटन सत्र में, इस तथ्य पर जोर दिया गया कि वैश्विक बहस के लिए एजेंडा निर्धारित करने में भारत और पोलैंड की, यूरोपीय संघ के सदस्य के रूप में पोलैंड की और एक प्रमुख वैश्विक शक्ति के रूप में भारत की महत्वपूर्ण

भूमिका है। इस बात पर जोर दिया गया कि महामारी ने भारत और पोलैंड की कई ताकतों को प्रदर्शित किया है, क्योंकि दोनों देश सामान्य स्थिति की ओर बढ़ रहे हैं, विशेष रूप से आर्थिक। दोनों देशों के बीच बहुत मजबूत व्यापार और निवेश संबंध हैं, पोलैंड में विशेष रूप से आईटी, कपड़ा और फार्मा में भारतीय निवेश महत्वपूर्ण है। पोलैंड भारत के लिए एक महत्वपूर्ण राजनीतिक और व्यापार भागीदार बना हुआ है, और बहुपक्षीय रूप से, यह यूरोपीय संघ का एक महत्वपूर्ण सदस्य है।

पहला विषय था चेंजिंग ग्लोबल सिनेरियो – ए शिफ़्ट टू इंडो-पैसिफिक। एक रणनीतिक रचना के रूप में इंडो-पैसिफिक की स्वीकृति ने, न केवल आर्थिक कारणों से बल्कि अमेरिका और चीन के बीच प्रतिस्पर्धा के कारण भी, इस क्षेत्र में भू-राजनीतिक केंद्र को स्थानांतरित कर दिया है। जबकि इंडो-पैसिफिक की अवधारणा अस्थिर बनी हुई है, यूरोपीय संघ की नीति ने इस क्षेत्र को देखने के तरीके में कनेक्टिविटी, व्यापार और अर्थनीति और एक मुखर चीन पर अपना ध्यान केंद्रित करने के साथ एक और आयाम जोड़ा है। भारत की भारत-प्रशांत दृष्टि 'आसियान-केंद्रीयता' के सिद्धांत पर आधारित है और इस क्षेत्र में साझा चुनौतियों के लिए साझा प्रतिक्रियाओं की आवश्यकता को देखते हुए इसका दृष्टिकोण सहयोग और सहकार्य पर आधारित है। इंडो-पैसिफिक पार्टनर्स के साथ जुड़ाव के प्राथमिक उद्देश्य के रूप में व्यापार और आर्थिक संबंधों में विविधता लाकर अधिक लचीला और टिकाऊ वैश्विक मूल्य श्रृंखला का निर्माण करना है। भारत और यूरोपीय संघ के बीच बीटीआईए का परिणाम आगे का पसंदीदा रास्ता हो सकता है।

चर्चा का दूसरा विषय अंडरस्टैंडिंग रीजनल डायनामिक्स के बारे में था - बेलारूस-पोलैंड सीमा मुद्दे और अफ़गानिस्तान पर चर्चा की गई। बेलारूस-पोलैंड सीमा के संबंध में इस बात पर प्रकाश डाला गया कि इसे प्रवासन संकट नहीं कहा जा सकता; बल्कि, यह एक सीमा संकट है। अफ़गानिस्तान पर, चार फ़ॉल्ट लाइन्स की पहचान की गई – पहली, तालिबान और शेष देश - जहां बहुसंख्यक तालिबान द्वारा शासित नहीं होना चाहते हैं। दूसरी, तालिबान और नेशनल रेसिस्टेन्स फ्रंट के बीच संघर्ष। तीसरी, तालिबान के भीतर मतभेद, विशेष रूप से हक्कानी ग्रुप के साथ। अंत में, इस्लामिक स्टेट ऑफ खुरासान और तालिबान के बीच बढ़ते संघर्ष - देश के भीतर बार-बार होने वाले हमलों से संकेत मिलता है कि तालिबान की अंतरिम सरकार देश में सुरक्षा सुनिश्चित करने में विफल रही है।

संवाद का तीसरा विषय इंडिया-पोलेण्ड बाइलैटरल रिलेशन्स – वे फ़ॉरवर्ड था। स्वच्छ जल प्रौद्योगिकी, अपशिष्ट उपचार प्रौद्योगिकी और चक्रीय अर्थव्यवस्था जैसे क्षेत्रों पर चर्चा की गई। दोनों देशों को आईटी क्षेत्र में नवाचार की जरूरत है और विज्ञान व प्रौद्योगिकी सहयोग की पहचान पुनरुद्धार के क्षेत्रों के रूप में की गई। भारत और पोलैंड न केवल सरकार से सरकार तक के स्तर पर बल्कि दोनों देशों के नोडल संस्थानों के बीच अक्षय ऊर्जा के लिए नई प्रौद्योगिकियों के विकास के लिए घनिष्ठ सहयोग की संभावना तलाश सकते हैं। पोलैंड को अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन में शामिल होने पर भी विचार करना चाहिए। स्टार्ट-अप हब और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में सक्रिय जुड़ाव भारत और पोलैंड के लिए नए और दूरगामी समाधान स्थापित करने और बनाने के लिए एक स्प्रिंगबोर्ड के रूप में काम कर सकता है। इस बात पर प्रकाश डाला गया कि दोनों देशों के बीच अकादमिक सहयोग के अवसरों को बढ़ाने के लिए पोलैंड में शैक्षणिक अवसरों के बारे में अधिक जागरूकता कार्यक्रमों की आवश्यकता है। एक संयुक्त अनुसंधान कोष की स्थापना पर विचार किया जा सकता है, जो जलवायु परिवर्तन, अंतरिक्ष, अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद, कृत्रिम बुद्धिमत्ता आदि के क्षेत्र में वैज्ञानिक सहयोग में सहकार्य को वित्तपोषित कर सकता है।

मैत्री दिवस: भारत - बांग्लादेश राजनयिक संबंधों की 50वीं वर्षगांठ, 06 दिसंबर 2021

कार्यक्रम "मैत्री दिवस: भारत-बांग्लादेश राजनयिक संबंधों की 50 वीं वर्षगांठ" 6 दिसंबर 2021 को सप्रू हाउस में आयोजित किया गया। 1971 में आज ही के दिन भारत ने औपचारिक रूप से बांग्लादेश को मान्यता दी थी। बांग्लादेश गणराज्य की सरकार की माननीय प्रधान मंत्री महामान्या शेख हसीना ने इस अवसर के लिए एक विशेष वीडियो संदेश भेजा। राजदूत विजय ठाकुर सिंह, महानिदेशक, आईसीडब्ल्यूए द्वारा स्वागत भाषण दिया गया। राजदूत मोहम्मद इमरान, उच्चायुक्त, बांग्लादेश उच्चायोग, नई दिल्ली ने अपना वक्तव्य दिया जिसके बाद बांग्लादेश गणराज्य की सरकार के संस्कृति राज्य मंत्री श्री के.एम. खालिद ने अपना व्याख्यान दिया। मुख्य भाषण श्री हर्षवर्धन श्रृंगला, विदेश सचिव, विदेश मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा दिया गया जिन्होंने भारत और बांग्लादेश के बीच संबंधों के महत्व और उनके निरंतर घनिष्ठ होते के बारे में चर्चा की। इस अवसर पर "भारत-बांग्लादेश संबंधों" पर एक लघु वृत्तचित्र फिल्म भी दिखाई गई।

अपने स्वागत भाषण में राजदूत विजय ठाकुर सिंह ने कहा कि भारत-बांग्लादेश संबंधों में वर्ष 2021 का विशेष महत्व है। यह वर्ष ऐतिहासिक महत्व की घटनाओं की 'त्रिवेणी' का प्रतीक है - बांग्लादेश के मुक्ति संग्राम की स्वर्ण जयंती, बंगबंधु शेख मुजीबुर रहमान की जन्म शताब्दी और हमारे राजनयिक संबंधों की 50 वीं वर्षगांठ। राजदूत मुहम्मद इमरान ने बांग्लादेश के राष्ट्रपिता- बंगबंधु शेख मुजीबुर रहमान और अन्य सभी नेताओं को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की जिन्होंने लगातार बढ़ते द्विपक्षीय संबंधों की नींव रखी।

श्री के.एम. खालिद ने अपनी बात की शुरुआत, दोनों देशों के प्रधानमंत्रियों को धन्यवाद देते हुए की, जिन्होंने इस साल मार्च में 6 दिसंबर को मैत्री दिवस के रूप में मनाने का फैसला किया। उन्होंने कहा कि आज भारत बांग्लादेश का सबसे बड़ा विकास भागीदार है। दोनों देश एक दूसरे के पूरक हैं और अपनी साझेदारी के आर्थिक लाभों को प्राप्त करने के लिए उज्ज्वल संभावनाएं प्रदान करते हैं। उन्होंने कहा कि उन्हें विश्वास है कि दोनों देश अपनी साझा चुनौतियों से पार पा लेंगे और साझेदारी को और भी मजबूत करेंगे।

श्री श्रृंगला ने "मैत्री" शब्द के गहरे अर्थ की व्याख्या करते हुए अपने भाषण की शुरुआत की। उन्होंने हमारे समय के महानतम नेताओं और ऐतिहासिक शख्सियतों में से एक बंगबंधु के नेतृत्व को सलाम किया जो एक राष्ट्र के भाग्य को आकार देने वाले व्यक्ति थे। श्री श्रृंगला ने बताया किया कि भारत ने बांग्लादेश को एक स्वतंत्र और संप्रभु राष्ट्र के रूप में मान्यता दी, जबकि वह अब भी अपनी मुक्ति की लड़ाई लड़ रहा है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मैत्री दिवस के अवसर पर अपने संदेश में हमारी पचास वर्ष की दोस्ती की नींव को याद किया एवं सराहना की और कहा कि अपने समकक्ष प्रधान मंत्री शेख हसीना के साथ संबंधों को और विस्तार देने तथा गहरा करने के लिए काम करने के लिए तत्पर हैं। उन्होंने वर्तमान में भारत-बांग्लादेश संबंधों के विभिन्न पहलुओं के बारे में विस्तार से बात की।

महामारी के दौरान द्विपक्षीय संबंधों के बारे में बात करते हुए उन्होंने कहा कि बांग्लादेश भारतीय टीकों के लिए पहले गंतव्यों में से एक था। उन्होंने उल्लेख किया कि महामारी के व्यवधान और लॉकडाउन के बाद पीएम मोदी की यात्रा का पहला गंतव्य बांग्लादेश था। भारत के राष्ट्रपति ने 16

दिसंबर को ढाका में विजय दिवस समारोह में भी भाग लिया, जो COVID 19 महामारी के बाद से माननीय राष्ट्रपति की पहली विदेश यात्रा भी थी। उन्होंने कहा कि दोनों देशों के बीच संबंधों की चुनौतियों को दूर किया जा रहा है और आपसी विश्वास और सहयोग के ढांचे में इसे सुलझाया जाना जारी रहेगा। दोनों देश अस्थिर करने वाली ताकतों, कट्टरपंथ और आतंकवाद का मुकाबला करने के लिए प्रतिबद्धता साझा करते हैं। नई चुनौतियों से निपटने के लिए सहयोग को मजबूत करने से सामाजिक सद्भाव को बनाए रखने में काफी मदद मिलेगी।

अपने संदेश में बांग्लादेश की प्रधान मंत्री महामान्या शेख हसीना ने उल्लेख किया कि मार्च 2021 में भारत के प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी की ढाका की राजकीय यात्रा के दौरान, दोनों प्रधानमंत्रियों ने ढाका और नई दिल्ली के साथ-साथ दुनिया भर के 18 चयनित शहरों में संयुक्त रूप से मैत्री दिवस मनाने पर सहमति व्यक्त की। उन्होंने राष्ट्रपिता, बंगबंधु शेख मुजीबुर रहमान और अन्य राष्ट्रीय नायकों को श्रद्धांजलि दी और देश के मुक्ति संग्राम में भारतीय सशस्त्र बलों और उनके सैनिकों के बलिदान के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की। उन्होंने भारत की पूर्व प्रधान मंत्री, इंदिरा गांधी और उनकी सरकार, अन्य राजनीतिक दलों के नेताओं और समग्र रूप से, 1971 में बांग्लादेश के लोगों के प्रति भारत के लोगों की उदारता को याद किया। प्रधानमंत्री हसीना ने कहा भारत और बांग्लादेश के बीच साझेदारी - "गतिशील, व्यापक और रणनीतिक आकार लेते हुए परिपक्व हो गई है और यह संप्रभुता, समानता, विश्वास और आपसी सम्मान पर आधारित है।" उन्होंने कहा कि द्विपक्षीय संबंधों के मूल में अब लोगों से लोगों के संपर्क, व्यापार, कारोबार और कनेक्टिविटी पर ध्यान केंद्रित करने की ज़रूरत है- जो कि कोविड-19 की वजह से द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों के बावजूद महत्वपूर्ण हो गए हैं।

उद्घाटन सत्र के बाद भारत-बांग्लादेश राजनयिक संबंधों की 50वीं वर्षगांठ पर पैनल चर्चा हुई। इसकी अध्यक्षता और संचालन राजदूत रजित मित्तर, बांग्लादेश में भारत के पूर्व उच्चायुक्त ने किया। पैनल के सदस्यों में थे। श्री सब्यसाची दत्ता, कार्यकारी निदेशक, एशियाई कॉन्फ़्लुएंस, शिलांग, हसनुल हक इनु, संसद सदस्य तथा बांग्लादेश के पूर्व सूचना मंत्री और श्री दीपंजन रॉय चौधरी, राजनयिक मामलों के संपादक, द इकोनॉमिक टाइम्स।

8वाँ हिंद महासागर संवाद, 15 दिसंबर 2021

भारतीय वैश्विक परिषद (ICWA) ने विदेश मंत्रालय (MEA), भारत सरकार के सहयोग से, 15 दिसंबर 2021 को 8वें हिंद महासागर संवाद की मेजबानी की। हिंद महासागर संवाद, हिंद महासागर रिम एसोसिएशन की ट्रैक 1.5 फ्लैगशिप की पहल है। संवाद आभासी रूप में – पोस्ट पैन्डेमिक इंडियन ओशियन: लीवरेजिंग डिजिटल टेक्नोलॉजीज़ फ़ॉर हैल्थ, एजुकेशन, डेवलपमेंट एंड ट्रेड इन आईओआरए मेम्बर स्टेट्स विषय पर आयोजित किया गया था। 8वें आईओडी में कुल 19 वक्ता थे, जो ऑस्ट्रेलिया, भारत, ईरान, मॉरीशस, ओमान, दक्षिण अफ्रीका और श्रीलंका सहित देशों से शिक्षाविदों, नीति निर्माताओं, राजनयिकों, प्रौद्योगिकी विशेषज्ञों, नौसेना विश्लेषकों के मल्टी-डिसिप्लिन समूह में थे। उद्घाटन और समापन सत्र के अलावा चार तकनीकी सत्रों में कार्यक्रम आयोजित किया गया था।

उद्घाटन भाषण राजदूत विजय ठाकुर सिंह, महानिदेशक, आईसीडब्ल्यूए द्वारा दिया गया। अपने भाषण में उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि हिंद महासागर के तटों के साथ भारत का गहरा जुड़ाव है। उन्होंने कहा कि भारत 'सागर' या 'सिक्योरिटी एंड ग्रोथ फ़ॉर ऑल इन द रीजन' के विज़न के अंतर्गत पारस्परिक रूप से सहयोगी तरीके से अपने क्षेत्रीय भागीदारों के साथ संबंधों को मजबूत करने का प्रयास करता है। आईओआरए के कार्यवाहक महासचिव डॉ. गाटोट हरि गुणवान अपने भाषण में कहा कि कि महामारी ने हमें दिखाया है कि दुनिया को चलाने के लिए प्रौद्योगिकियां कितनी महत्वपूर्ण हैं; इसलिए हमें नई तकनीकों को साझा करके और हिंद महासागर क्षेत्र में एक स्थायी व्यवस्था बनाए रखते हुए सामूहिक रूप से एक दूसरे का सहयोग करना चाहिए। मुख्य भाषण डॉ. राजकुमार रंजन सिंह, विदेश राज्य मंत्री, भारत सरकार द्वारा दिया गया। उन्होंने कहा कि हिंद महासागर क्षेत्र के बारे में भारत का विज़न प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा प्रतिपादित सागर सिद्धांत पर आधारित है, जिसमें राजनीतिक, सुरक्षा, आर्थिक और सामाजिक-सांस्कृतिक क्षेत्र शामिल हैं। यह हिंद महासागर क्षेत्र और वृहद इंडो-पैसिफ़िक को विश्वास और पारदर्शिता के माहौल, अंतरराष्ट्रीय समुद्री नियमों का सम्मान, अंतरराष्ट्रीय कानून के तहत अधिकार के रूप में समान पहुंच, एक-दूसरे के

हितों के प्रति संवेदनशीलता, विवादों का शांतिपूर्ण समाधान और बढ़ते हुए समुद्री सहयोग पर आधारित शांति और समृद्धि के क्षेत्र के रूप में देखता है। उन्होंने महामारी से उबरने के लिए आईओआरए सदस्य देशों के बीच अधिक सहयोग की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने नई और उभरती प्रौद्योगिकियों की महत्वपूर्ण भूमिका का भी उल्लेख किया और इस संबंध में सहयोग करने के लिए भारत की तत्परता की फिर से पुष्टि की।

"एम्ब्रेसिंग ई-हैल्थ टू फाइट कोविड-19" विषय पर पहले तकनीकी सत्र की अध्यक्षता डॉ. निवेदिता रे, निदेशक अनुसंधान, आईसीडब्ल्यूए, भारत ने की। सत्र में मॉरीशस, भारत और श्रीलंका के वक्ता थे। इस बात पर सहमति थी कि डिजिटल स्वास्थ्य प्रौद्योगिकियों जैसे कॉन्टेक्ट ट्रेसिंग अनुप्रयोगों, वैक्सीन बुकिंग वेबसाइटों ने कोविड-19 महामारी से निपटने में एक अपरिहार्य भूमिका निभाई है। आईओआरए सभी पहलों को समानुक्रमित करने और सभी देशों के अनुभव से सीखने के लिए एक अच्छा मंच प्रदान करता है।

"इन्वेस्टमेंट्स इन ई-एजुकेशन" पर दूसरे सत्र की अध्यक्षता आयुक्त, उच्च शिक्षा आयोग, मॉरीशस डॉ. रोमेला मोही ने की। सत्र में वक्ता दक्षिण अफ्रीका, ईरान, ऑस्ट्रेलिया और श्रीलंका से थे। चर्चा के दौरान कोविड महामारी के आलोक में शिक्षा क्षेत्र की प्रमुख चुनौतियों पर प्रकाश डाला गया। आईओआरए क्षेत्र में विश्वविद्यालय नेटवर्क की स्थापना को, ई-लर्निंग को आगे बढ़ाने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में सुझाया गया था। "डेवलपमेंट थ्रू डिजिटल टेक्नोलॉजीज़" पर तीसरे सत्र की अध्यक्षता श्री मोहित कपूर, अध्यक्ष, एआई और डिजिटल परिवर्तन समिति, फिक्की व मुख्य तकनीकी अधिकारी, महिंद्रा समूह, भारत ने की। सत्र में वक्ता मॉरीशस, श्रीलंका, दक्षिण अफ्रीका और ओमान से थे। यह नोट किया गया कि व्यवसायों, स्वास्थ्य और संयुक्त राष्ट्र सतत विकास लक्ष्यों में निहित वैश्विक विकास एजेंडे को सम्पुटित करने में डिजिटल प्रौद्योगिकी सबसे महत्वपूर्ण स्तंभ बन रही है।

"डिजिटल शिपिंग, स्मार्ट पोर्ट्स एंड ट्रेड" पर अंतिम सत्र डॉ प्रशांत जयमन्ना, वाइस चेयरमैन, श्रीलंका पोर्ट्स अथॉरिटी, श्रीलंका की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। सत्र में वक्ता ईरान और भारत के थे। इस बात पर आम सहमति थी कि प्रौद्योगिकी, स्वचालन और सुरक्षा सूचना के एक नए चरण की ओर ले जा रही है जो समुद्री उद्योग की प्रगति और विकास के महत्वपूर्ण घटक हैं।

समापन भाषण श्रीमती रीवा गांगुली दास, सचिव (पूर्व), विदेश मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा दिया गया। अपने संबोधन में, उन्होंने नई और उभरती प्रौद्योगिकियों का पूरी तरह से लाभ उठाने के लिए अपने सदस्यों और संवाद भागीदारों के बीच आईओआरए के नेतृत्व वाले सहयोग की अपार संभावनाओं पर जोर दिया। उन्होंने स्वास्थ्य, शिक्षा, व्यापार और विकास जैसे क्षेत्रों में साझा चुनौतियों को हल करने के लिए सर्वोत्तम प्रथाओं और नवीन दृष्टिकोणों को साझा करने के महत्व को भी रेखांकित किया।

"भारत-वियतनाम व्यापक सामरिक साझेदारी 2016-2021 की 5वीं वर्षगांठ का समारोह तथा भारत और वियतनाम के बीच राजनयिक संबंधों की 50वीं वर्षगांठ के समारोह की घोषणा 1972-2022", 17 दिसंबर 2021

आईसीडब्ल्यूए ने विदेश मंत्रालय, भारत सरकार और वियतनाम दूतावास, नई दिल्ली के सहयोग से, "भारत-वियतनाम व्यापक सामरिक साझेदारी 2016-2021 की 5वीं वर्षगांठ का समारोह तथा भारत और वियतनाम के बीच राजनयिक संबंधों की 50वीं वर्षगांठ के समारोह की घोषणा 1972-2022" 17 दिसंबर, 2021 को एक कार्यक्रम का आयोजन सप्रू हाउस में किया। एक उच्च स्तरीय वियतनामी संसदीय प्रतिनिधिमंडल जिसका नेतृत्व महामहिम वुओंग दिन्ह ह्यू, प्रेसिडेंट, नेशनल एसेम्बली ऑफ़ द सोशलिस्ट रिपब्लिक ऑफ़ वियतनाम ने किया, जो राज्य सभा के सभापति और लोकसभा के अध्यक्ष के संयुक्त निमंत्रण पर भारत आए, ने भाग लिया। राजदूत विजय ठाकुर सिंह, महानिदेशक, आईसीडब्ल्यूए द्वारा स्वागत भाषण दिया गया जिसके बाद डॉ. एस. जयशंकर, माननीय विदेश मंत्री, भारत सरकार और महामहिम वुओंग दिन्ह ह्यू, प्रेसिडेंट, नेशनल असेंबली, वियतनाम ने संबोधित किया।

अपने स्वागत भाषण में, राजदूत विजय ठाकुर सिंह, महानिदेशक, आईसीडब्ल्यूए ने कहा कि वियतनाम भारत के सबसे करीबी भागीदारों में से एक है, विश्वसनीय मित्र है और 'एक्ट ईस्ट' नीति और इंडो-पैसिफिक विज़न का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है। 1972 में राजनयिक संबंधों की स्थापना के बाद से, भारत-वियतनाम साझेदारी एक 'व्यापक रणनीतिक साझेदारी' बन गई है, जिसे 2016 में स्थापित किया गया था। सहयोग के सभी क्षेत्रों में द्विपक्षीय संबंध फल-फूल रहे हैं और भारत व वियतनाम दोनों एक खुले, कुशल और नियम आधारित स्थापत्य के लिए प्रतिबद्ध हैं। भारत के विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर ने अपने संबोधन में कहा कि भारत और वियतनाम ने संबंधों को उच्च स्तर पर ले जाने के लिए काम करना कभी बंद नहीं किया है। उन्होंने साझेदारी के प्रमुख स्तंभों में विशेष रूप से - राजनीतिक और सुरक्षा, अर्थनीति और निवेश, विकास सहयोग, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंध, और रक्षा सहयोग में विकास को चिन्हित किया। डॉ. जयशंकर ने कहा कि भारतीय दृष्टिकोण से, वियतनाम आसियान और इंडो-पैसिफिक संदर्भ में एक प्रमुख भागीदार है। दोनों देशों का एक बड़ा एजेंडा पहले से ही चल रहा था चाहे यह वाणिज्य, कनेक्टिविटी हो या संस्कृति। द्विपक्षीय राजनीतिक और रक्षा सहयोग भी लगातार बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि व्यापक रणनीतिक साझेदारी के पिछले पांच साल बहुत उपयोगी रहे हैं और आशा व्यक्त की कि अगला दशक और भी अधिक उपयोगी होना चाहिए। वैश्विक अनिश्चितता और कोविड के बाद के आर्थिक सुधार के समय में, जयशंकर ने कहा कि भारत-वियतनाम साझेदारी इंडो-पैसिफ़िक क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण स्थिरीकरण कारक होगी। राष्ट्रीय महत्वाकांक्षाओं और वैश्विक जिम्मेदारियों को ध्यान में रखते हुए भारत और वियतनाम को आगे बढ़ना चाहिए।

अपने संबोधन में महामहिम श्री वुओंग दिन्ह ह्यू, प्रेसिडेंट, नेशनल एसेम्बली ऑफ़ द सोशलिस्ट रिपब्लिक ऑफ़ वियतनाम ने कहा कि द्विपक्षीय संबंधों की व्यापक प्रकृति समय की कसौटी पर खरा उतरने वाले संबंधों के साथ विश्वास पर बनी है जिसे सांसदों सहित उच्च स्तरीय यात्राओं के माध्यम से और मजबूत किया गया है। कोविड-19 की कठिनाइयों के बावजूद दोनों देशों के बीच आर्थिक संबंध लगातार फल-फूल रहे हैं। उन्होंने कहा कि लोगों से लोगों से संपर्क और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के साथ द्विपक्षीय संबंध और आगे बढ़ेंगे। वियतनाम महामारी के दौरान भारत द्वारा दिए गए सहयोग को नहीं भूलेगा। दोनों देश एक नियम-आधारित बहुपक्षीय व्यवस्था का समर्थन करते हैं, बल प्रयोग से परहेज करते हैं, शांतिपूर्ण उपायों के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय विवादों का समाधान करते हैं और इस क्षेत्र में शांति, स्थिरता और न्याय के लिए यूनाइटेड नेशन्स कन्वेंशन ऑन द लॉ ऑफ़ द सी (यूएनसीएलओएस) को मान्य ठहराते हुए समुद्री सुरक्षा और समुद्र की स्वतंत्रता सुनिश्चित करते हैं।

आईसीडब्ल्यूए के उपाध्यक्ष के रूप में, ईएएम डॉ. एस जयशंकर ने, वियतनाम के पूर्व प्रेसिडेंट हो ची मिन्ह द्वारा 7 फरवरी 1958 को आईसीडब्ल्यूए को संबोधित करते हुए एक चित्र को महामहिम वुओंग दिन्ह ह्यू, प्रेसिडेंट, नेशनल एसेम्बली वियतनाम को भेंट किया।

9वां सीआईसीए थिंक टैंक फ़ोरम, 28-29 दिसंबर 2021

आईसीडब्ल्यूए ने भारत के प्रतिनिधि थिंक टैंक के रूप में 28-29 दिसंबर 2021 को एशिया (CICA) थिंक टैंक फ़ोरम में इंटरेक्शन एंड कॉन्फिडेंस बिल्डिंग मेशर्स पर ऑनलाइन 9वें सम्मेलन में भाग लिया। यह सीआईसीए के स्थायी सलाहकार निकाय के रूप में थिंक टैंक फ़ोरम की पहली बैठक भी थी। फ़ोरम में सीआईसीए सदस्य देशों के प्रमुख थिंक टैंक और अनुसंधान संस्थानों के विशेषज्ञों ने भाग लिया। कॉन्फिडेंस बिल्डिंग मेशर्स के कार्यान्वयन द्वारा सीआईसीए एशिया में शांति, सुरक्षा और स्थिरता को बढ़ावा देने की दिशा में सहयोग बढ़ाने के लिए 27 सदस्यीय निकाय है।

9वें सीआईसीए थिंक टैंक फ़ोरम की मेजबानी शंघाई इंस्टीट्यूट फ़ॉर इंटरनेशनल स्टडीज़, चीन द्वारा की गई थी। राजदूत भास्कर बालकृष्णन, साइंस डिप्लोमेसी फ़ेलो, रिसर्च एंड इन्फॉर्मेशन सिस्टम्स फ़ॉर डेवलपिंग कंट्रीज़ (आरआईएस); डॉ अतहर जफ़र, सीनियर रिसर्च फ़ेलो, आईसीडब्ल्यूए; और डॉ. संजीव कुमार, सीनियर रिसर्च फ़ेलो, आईसीडब्ल्यूए, ने फ़ोरम में भाग लिया जिसमें निम्नलिखित तीन सत्र थे: (i) महामारी के बाद के युग में सीआईसीए के सदस्य देशों के लिए सुरक्षा चुनौतियां; (ii) डिजिटल युग में सुरक्षा पर सीआईसीए सदस्य देशों के बीच सहयोग; और (iii) सीआईसीए के परिवर्तन और उन्नयन पर सीआईसीए थिंक टैंक के विचार।

आईसीडब्ल्यूए प्रकाशन

सप्रू हाउस साउंडिंग्स ऑन एरिया स्टडीज़

रीसेंट डेवलपमेंट इन अफ़गानिस्तान: आईसीडब्ल्यूए रिफ़्लेक्शन्स

निवेदिता रे और अन्वेषा घोष (एडि.)

(आईसीडब्ल्यूए; केडब्ल्यू पब्लिशर्स; 2021)

प्राक्कथन

'रीसेंट डेवलपमेंट इन अफ़गानिस्तान: आईसीडब्ल्यूए रिफ़्लेक्शन्स' डॉ निवेदिता रे और डॉ अन्वेषा घोष द्वारा संपादित, सप्रू हाउस साउंडिंग्स ऑन एरिया स्टडीज़ सीरीज़ का भाग है। और भारतीय वैश्विक परिषद में अफ़गानिस्तान में हाल के घटनाक्रम पर शोध कार्य का परिणाम है।

अफ़गानिस्तान के साथ भारत के लंबे समय से चले आ रहे संबंधों को देखते हुए, परिषद के लिए देश मुख्य केंद्रीय क्षेत्रों में से एक रहा है। आईसीडब्ल्यूए में अफ़गानिस्तान से संबंधित मुद्दों और विकास पर व्यावहारिक विश्लेषण लाने के लिए निरंतर प्रयास किया गया है। यह संग्रह जुलाई और नवंबर 2021 के बीच अफ़गानिस्तान के घटनाक्रम पर आईसीडब्ल्यूए में अनुसंधान संकाय द्वारा तैयार किए गए रिसर्च पेपर्स को एक साथ लाने का प्रयास है।

इस खंड के पेपर्स में 15 अगस्त, 2021 को तालिबान के अधिग्रहण से पहले के और बाद में अफ़गानिस्तान में प्रमुख घटनाक्रमों को समेकित किया गया है और बाद में, यह अफ़गानिस्तान में विकास के लिए क्षेत्रीय और वैश्विक शक्तियों अर्थात् - ईरान, चीन, कतर, अमेरिका, रूस, यूरोपीय संघ, अरब दुनिया, अफ्रीका, दक्षिण एशिया, मध्य एशिया, लैटिन अमेरिका और आसियान की प्रतिक्रियाओं का एक सिंहावलोकन प्रदान करता है।

हमें उम्मीद है कि यह प्रकाशन देश और संबंधित क्षेत्र के बारे में पाठकों की समझ को बढ़ाएगा और इस विषय पर आगे के अध्ययन और शोध के लिए एक प्रेरणा के रूप में कार्य करेगा।

राजदूत विजय ठाकुर सिंह
महानिदेशक
भारतीय वैश्विक परिषद्

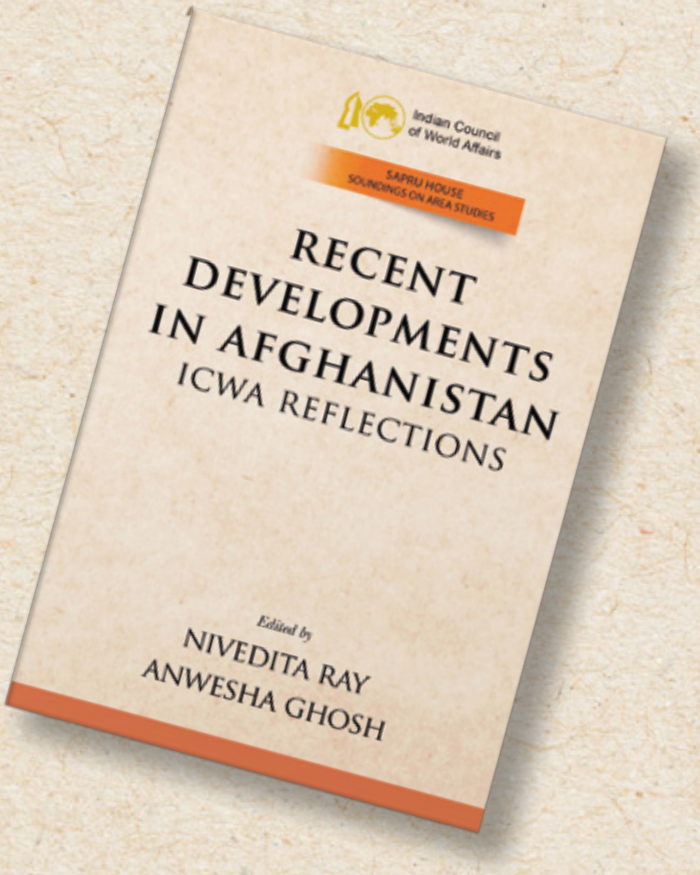

आईसीडब्ल्यूए प्रकाशन

मुद्दा संक्षिप्त

1. डॉ. संकल्प गुर्जर, केन्या भारत-प्रशांत को कैसे देखता है (01 अक्टूबर 2021)
2. डॉ. जोजिन वी जॉन, किशिदा अगले जापानी प्रधानमंत्री बनने के लिए चुने गए: परिवर्तन पर निरंतरता के लिए वोट (06 अक्टूबर 2021)
3. डॉ. राहुल नाथ चौधरी, क्या चीन सीपीटीपीपी में शामिल होकर वैश्विक व्यापार परिदृश्य को पुन: आकार देगा? (12 अक्टूबर 2021)
4. डॉ. फ़ज़्ज़ुर रहमान सिद्दीकी, तालिबान 2.0 और अरब विश्व: अतीत और वर्तमान (12 अक्टूबर 2021)
5. डॉ. अतहर ज़फर, क्षेत्रीय सुरक्षा, स्थिरता पर केंद्रित दुशांबे एससीओ शिखर सम्मेलन (13 अक्टूबर 2021)
6. डॉ. अंकिता दत्ता, जर्मन चुनावों की मुख्य बातें (14 अक्टूबर 2021)
7. डॉ. दीपिका सारस्वत, नागोर्नो-काराबाख युद्ध का एक वर्ष और अज़रबैजान और ईरान के बीच तनाव (14 अक्टूबर 2021)
8. डॉ. फ़ज़्ज़ुर रहमान सिद्दीकी, अपक्षय राजनीतिक इस्लाम: इस्लामवादियों का मोरक्को चुनाव में दशक के बाद बयान (20 अक्टूबर 2021)
9. डॉ. विवेक मिश्रा, अफगानिस्तान में रूस की तैयार सामरिक उभयवृत्तिता (22 अक्टूबर 2021)
10. डॉ. टेम्जेनमेरेन आओ, दक्षिण पूर्व एशिया और अफगानिस्तान में तालिबान की वापसी (22 अक्टूबर 2021)
11. डॉ. स्तुति बैनर्जी, लैटिन अमेरिका और अफगानिस्तान (22 अक्टूबर 2021)
12. डॉ. नरेश कुमार, नेपाल, एमसीसी और अमेरिका की हिंद-प्रशांत रणनीति (29 अक्टूबर 2021)
13. डॉ. अंकिता दत्ता, पश्चिमी बाल्कन और यूरोपीय संघ के विस्तार की संभावनाएं (01 नवंबर 2021)
14. डॉ. जोजिन वी. जॉन, आम चुनाव 2021: स्थिरता और यथास्थिति के लिए जापान का मतदान (12 नवंबर 2021)
15. डॉ. ध्रुबज्योति भट्टाचार्जी, बांग्लादेश-रूस ऊर्जा सहयोग (12 नवंबर 2021)
16. डॉ. सुदीप कुमार, शी की साझा समृद्धि 2035 (15 नवंबर 2021)
17. डॉ. स्तुति बैनर्जी, कैरेबियन और महामारी (17 नवंबर 2021)
18. डॉ. ध्रुबज्योति भट्टाचार्जी, तहरीक-ए-लबैक पाकिस्तान का विरोध: एक आकलन (29 नवंबर 2021)
19. डॉ. फ़ज़्ज़ुर रहमान सिद्दीकी, लेबनान: एक असफल राज्य की कहानी (08 दिसंबर 2021)
20. डॉ. स्तूति बैनर्जी, संयुक्त राज्य अमेरिका और चीन संबंध: सतत निर्भरता के साथ प्रतिद्वंद्विता (14 दिसंबर 2021)
21. डॉ. अंकिता दत्ता, यूरोपीय संघ-रूस संबंधों पर एक नज़र (14 दिसंबर 2021)
22. डॉ. तेशू सिंह, चीन की कम्युनिस्ट पार्टी की छठे प्लेनम की 19वीं केंद्रीय समिति का: एक आकलन (21 दिसंबर 2021)
23. डॉ. स्तुति बैनर्जी, अमेरिका-रूस संबंधों में भिन्नता को समझना (28 दिसंबर 2021)

दृष्टिकोन

1. डॉ. स्तुति बैनर्जी, अल साल्वाडोर और राष्ट्रपति बुकेले (02 अक्टूबर 2021)
2. डॉ. संजीव कुमार, बिजली की कमी चीन के आर्थिक सुधार को प्रभावित करती है (06 अक्टूबर 2021)
3. डॉ. टेम्जेनमेरेन आओ, ऑकस(AUKUS): आसियान और नया संरेखण (07 अक्टूबर 2021)
4. डॉ. तेशू सिंह, ऑकस: चीनी ऑकस से परिप्रेक्ष्य (18 अक्टूबर 2021)
5. डॉ. अन्वेशा घोष, G20 अफगानिस्तान में मानवीय संकट को टालने के लिए सहायता का वादा (28 अक्टूबर 2021)
6. डॉ. समता मल्लपति, मालदीव: महामारी के बीच एक छोटे से द्वीप राष्ट्र की चिंताएं (28 अक्टूबर 2021)
7. डॉ. प्रज्ञा पाण्डेय, भारत-जापान समुद्री सहयोग: गतिशील सामरिक वातावरण में एक मजबूत साझेदारी को सुदृढ़ करना (01 नवंबर 2021)
8. डॉ. राहुल नाथ चौधरी, भारत पाँच क्षेत्रों में क्वाड से आर्थिक लाभ ले सकता है (02 नवंबर 2021)
9. डॉ. ध्रुबज्योति भट्टाचार्जी, एफ.ए.टी.एफ. की ग्रे लिस्ट में पाकिस्तान (10 नवंबर 2021)
10. डॉ. अरशद, सऊदी अरब के नेतृत्व वाली हरित पश्चिम एशिया पहल (16 नवंबर 2021)
11. डॉ. अन्वेषा घोष, भारत ने अफगानिस्तान पर तीसरी क्षेत्रीय सुरक्षा वार्ता की मेजबानी की (17 नवंबर 2021)
12. डॉ. समता मल्लपति, श्रीलंका – चीन संबद्धता: हाल की घटनाएं और मिलीजुली प्रतिक्रिया (06 दिसंबर 2021)
13. डॉ. तेशू सिंह, भारत में ताइवानी सेमीकंडक्टर निवेश: सामरिक और आर्थिक महत्व (10 दिसंबर 2021)
14. डॉ. टेमजेनमेरेन आओ, भारत-आसियान साझेदारी में उभरते अभिसरण (14 दिसंबर 2021)
15. डॉ. जोजिन वी जॉन, कोरियाई प्रायद्वीप शांति पहल के लिए राष्ट्रपति मून का अंतिम प्रयास (15 दिसंबर 2021)
16. डॉ. अन्वेषा घोष, भारत ने अफगानिस्तान पर मध्य एशियाई देशों के साथ 'क्षेत्रीय सहमति' बनाई (28 दिसंबर 2021)
17. डॉ. संकल्प गुर्जर, चीन की बढ़ती वैश्विक सैन्य उपस्थिति: संयुक्त अरब अमीरात और इक्वेटोरियल गिनी में बेस? (28 दिसंबर 2021)
18. डॉ. राहुल नाथ चौधरी, भारत को एफटीए बातचीत शुरू करने में सावधानी से आगे बढ़ना चाहिए (29 दिसंबर 2021)
19. डॉ. प्रज्ञा पाण्डेय, सोलोमन द्वीप समूह में राजनीतिक संकट: यह किसके बारे में है? (29 दिसंबर 2021)

यूएनएससी में भारत

1. संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत: सितम्बर 2021 के लिए मासिक संक्षिप्त एशिया, अफ्रीका और विषयगत मुद्दों पर ध्यान केंद्रित।
2. संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत: अक्टूबर 2021 के लिए मासिक संक्षिप्त एशिया, अफ्रीका, लैटिन अमेरिका और विषयगत मुद्दों पर ध्यान केंद्रित।
3. संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत: नवंबर 2021 का मासिक सार एशिया, अफ्रीका और विषयगत मुद्दों पर ध्यान केंद्रित।

सप्रू हाउस पेपर

1. डॉ. टेम्जेनमेरेन आओ, दक्षिण पूर्व एशिया से जुड़ाव का निर्माण: भारत-म्यांमार-थाईलैंड त्रिपक्षीय हाइवे (अक्टूबर 2021)

अतिथि कॉलम

1. राजदूत खेया भट्टाचार्य, मोरक्को और इज़राइल के बीच संबंधों का सामान्यीकरण: इसकी उत्पत्ति और निहितार्थ। (25 नवंबर 2021)

पुस्तकें

Twenty Years of Mekong-Ganga Cooperation (MGC): Achievements and Way Forward,

Edited by Prabir De,

(Indian Council of World Affairs; Vij Books, 2021)

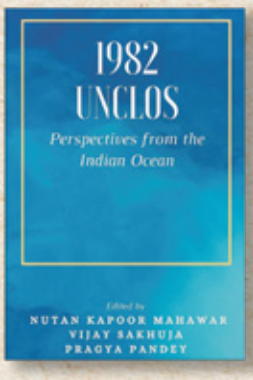

1982 UNCLOS: Perspectives from the Indian Ocean

Edited by Nutan Kapoor Mahawar, Vijay Sakhuja & Pragya Pandey,

(Indian Council of World Affairs; KW Publishers, 2021)

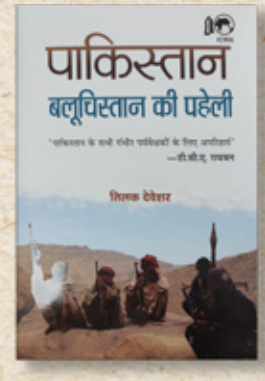

पाकिस्तान: बलूचिस्तान कांउण्ड्रम, तिलक देवेशेर

हिंदी संस्करण,

(भारतीय वैश्विक परिषद्; प्रभात प्रकाशन, 2021)

Pakistan: The Balochistan Conundrum by Tilak Devesher

Urdu Edition,

(Indian Council of World Affairs; Prabhat Prakashan, 2021)

India's Relation with the International Monetary Fund 25 Years in Perspective 1991-2016 by V. Srinivas

Tamil Edition,

(Indian Council of World Affairs; Prabhat Prakashan, 2021)

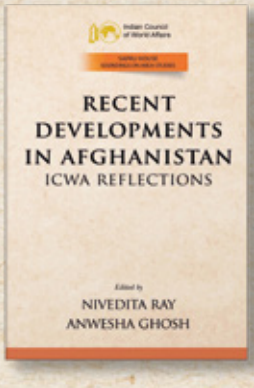

Sapru House Soundings in Area Studies: Recent Development in Afghanistan: ICWA Reflections

Edited by Nivedita Ray & Anwesha Ghosh

(Indian Council of World Affairs; KW Publishers, 2021)

इण्डिया क्वार्टरली
एक जर्नल ऑफ़ इंटरनेशनल अफ़ेयर्स
खंड 77, अंक 4,
अक्टूबर-दिसंबर 2021

संपादकीय

अन्य बातों के अलावा, अफ़गानिस्तान से संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा हाल ही में पीछे हटना भू-राजनीतिक गठबंधनों के रीसेट में शामिल वैश्विक अशांति का एक और संकेत है। जबकि रीसेट पिछली सदी के वैश्विक आर्थिक अवस्थांतर के अंत में पीछे जाता है, जिस तेजी से पुरानी व्यवस्था सुलझ रही है, वह कई प्रश्नों को जन्म देती है। इनमें क्षेत्रीय संस्थानों का दृढ़ता और लचीलापन, प्रतिस्पर्धी शक्तियों के दबाव को समायोजित करने के लिए देशों की क्षमता और भू-राजनीतिक भविष्य को आकार देने के लिए मध्य/क्षेत्रीय शक्तियों के अवसर शामिल हैं। उदाहरण के लिए, भारत एक बहुत ही जटिल दुनिया या दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों में स्वयं को कहां रखता है? साझेदारी को आकार देने के लिए किन चिंताओं की संभावना है? और कैसे, वैश्विक आम सहमति के टूटने में, भविष्य की पीढ़ियों के लिए ग्लोबल कॉमन्स का प्रबंधन किया जाना है? हमारा वर्तमान अंक इनमें से प्रत्येक मुद्दे से जुड़ा है।

पश्चिमी दुनिया के बाद वैश्विक शक्ति के वितरण पर बहस में योगदान के लिए, रूस का एक लेख महान शक्ति के गुणों पर नज़र डालता है और भारत के लिए एक महान शक्ति बनने की अपनी क्षमता का दोहन करने पर तर्क प्रस्तुत करता है। दूसरा आसियान जैसे क्षेत्रीय संस्थानों की क्षमता और प्रयासों पर विचार करता है, ताकि उनके पड़ोस में होने वाले सत्ता परिवर्तन पर अपने नेतृत्व की स्थिति को बनाए रखा जा सके। जैसे-जैसे एशिया में नई संस्थाएँ और साझेदारियाँ उभरती हैं, रीजनल कॉम्प्रीहेंसिव इकोनॉमिक पार्टनर (आरसीईपी) की सदस्यता के संबंध में भारत की तरह आर्थिक और राजनीतिक लागतों और लाभों के बारे में भी देश चिंतित हैं, जैसा कि दो अलग-अलग दृष्टिकोणों से दो पेपर इंगित करते हैं। जहां एक लेखक आरसीईपी पर हस्ताक्षर करने के लिए भारत की अनिच्छा को एक खोए हुए अवसर के रूप में देखता है, वहीं दूसरा इंगित करता है कि इंडो-पैसिफ़िक में अवसर आरसीईपी से होने वाले नुकसान की भरपाई करते हैं। घर के क़रीब, साउथ एशियन एसोसिएशन फ़ॉर रीजनल कोऑपरेशन (सार्क) के कायाकल्प पर आशावाद, व्यापार की संभावना के बावजूद दक्षिण एशिया के भीतर व्यापार गहनता के अभाव पर चिंता व्यक्त करते हुए, व्यापारिक व्यवस्थाओं में संरचनात्मक परिवर्तन का आह्वान करता है। दूसरे स्तर पर, मानव सुरक्षा पर चिंता, चाहे हमारे पड़ोस में कट्टरता के अनवरत रूपों के संबंध में हो, आर्कटिक के बढ़ते प्रतिभूतिकरण या बाहरी अंतरिक्ष के अधिकारों के मुद्दे हों, वैश्विक राजनीति की प्रकृति के बारे में प्रश्न उठाते हैं। सभी मामलों में, लेखकों का तर्क है, स्पष्ट रूप से विकास और मानव सुरक्षा के मुद्दों को सुरक्षित करने की प्रवृत्ति के मुद्दे क्या हैं या ग्लोबल कॉमन्स के अनन्य अधिकारों का दावा करने के लिए वैकल्पिक समाधानों पर वैश्विक सहमति के लिए बहुत कम जगह छोड़ते हैं। जैसे-जैसे द्वितीय विश्व युद्ध के बाद वैश्विक व्यवस्थाओं पर आम सहमति टूटती है, महत्वपूर्ण वैश्विक चुनौतियों से निपटने का मतलब है कि देशों को संभावित भविष्य के परिदृश्यों के साथ-साथ एक सक्षम वैश्विक राजनीति विकसित करने पर ध्यान देना चाहिए। अंत में, इस अंक में भारतीय वैश्विक परिषद् के इतिहास पर एक संक्षिप्त आलेख शामिल है, जो लेखक द्वारा परिषद् के हाल ही में प्रकाशित संस्थागत इतिहास का एक अंश है। जैसा कि भारत इस क्षेत्र में और बाहर नई चुनौतियों का सामना कर रहा है, यह इस पर चिंतन करने का उपयुक्त समय हो सकता है कि उद्देश्यपूर्ण शोध को बनाए रखने के लिए विदेश नीति और संस्थानों के निर्माण के प्रति एक प्रारंभिक चिंता क्यों थी।

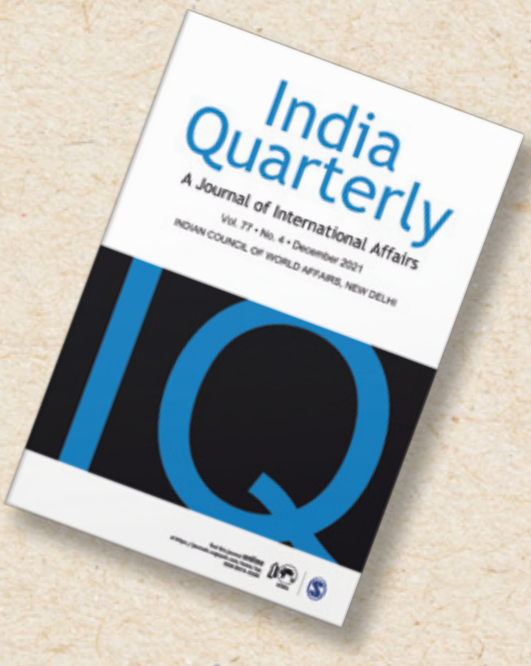

मधु भल्ला
एडिटर, इण्डिया क्वार्टरली

आईसीडब्ल्यूए के बारे में

भारतीय वैश्विक परिषद् (ICWA) की स्थापना 1943 में सर तेज बहादुर सप्रू और डॉ एच.एन. कुंजरू के नेतृत्व में प्रख्यात बुद्धिजीवियों के एक समूह द्वारा की गई थी। इसका मुख्य उद्देश्य अंतरराष्ट्रीय संबंधों पर एक भारतीय परिप्रेक्ष्य बनाना और विदेश नीति के मुद्दों पर ज्ञान और सोच के भंडार के रूप में कार्य करना था। परिषद आज एक आंतरिक संकाय के साथ-साथ बाहरी विशेषज्ञों के माध्यम से नीति शोध करती है। यह सम्मेलनों, संगोष्ठियों, गोलमेज परिचर्चाओं, व्याख्यानों सहित बौद्धिक गतिविधियों की एक श्रृंखला नियमित रूप से आयोजित करती है और कई प्रकाशनों का प्रकाशन करती है। इसमें एक बहुत सी पुस्तकों से सुसज्जित पुस्तकालय, एक सक्रिय वेबसाइट है, और यह 'इंडिया क्वार्टरली' पत्रिका प्रकाशित करती है। अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर बेहतर समझ को बढ़ावा देने और आपसी सहयोग के क्षेत्रों को विकसित करने के लिए आईसीडब्ल्यूए ने अंतरराष्ट्रीय थिंक टैंकों और अनुसंधान संस्थानों के साथ 50 से अधिक समझौता ज्ञापन किए हैं। परिषद् की भारत में अग्रणी शोध संस्थानों, थिंक टैंकों और विश्वविद्यालयों के साथ भी साझेदारी है।

मेंटर : राजदूत विजय ठाकुर सिंह, महानिदेशक, आईसीडब्ल्यूए, सप्रू हाउस, नई दिल्ली

संपादक : श्रीमती नूतन कपूर महावर, संयुक्त सचिव, आईसीडब्ल्यूए, सप्रू हाउस, नई दिल्ली

प्रबंध संपादक : डॉ. निवेदिता रे, निदेशक अनुसंधान, आईसीडब्ल्यूए

सहायक संपादक : डॉ. ध्रुबज्योति भट्टाचार्जी, अध्येता, आईसीडब्ल्यूए

हमसे जुड़ें

/Sapru.House @ICWA_NewDelhi /ICWA_NewDelhi www.icwa.in

आईसीडब्ल्यूए, सप्रू हाउस, बाराखंभा रोड, नई दिल्ली - 110001 द्वारा प्रकाशित समाचार पत्रक
वेबसाइट: http://www.icwa.in; दूरभाष नं 011-23317246 फैक्स नंबर 011-23310638